बच्चों की खुशी के लिए

सपने में भी नहीं सोचा था कि टिकट नहीं मिलेगा। यार-दोस्तों ने पहले ही बधाई दे डाली थी। यह सीट भी कमाल की निकल गई। कह रहे हैं यह सीट करोड़ों की है, क्या देते हो? इश्तिहार में तो जनता को सब कुछ मुफ़्त में देने का वादा कर रहे हैं और सीट दस लाख में भी नहीं दे रहे। पचास लाख मांग रहे हैं। जीत का कोई पक्का ठिकाना नहीं। भाजपा से एक सुंदरी खड़ी हो गई है, वह भी पंजाबन। एक तो करेला, ऊपर से नीम चढ़ा। जीतेगी नहीं तो वोट काटेगी। पंजाबन है तो लटके-झटके दिखा कर पंजाबी वोट काट ही लेगी, मुझे मिलेगा क्या? मैं भी तो पंजाबी वोटों के ही सहारे हूं। अब करूं क्या, बीस से पच्चीस लाख तक पहुंच गया, पर अगला हिलने को तैयार नहीं। सारी सेवा धरी की धरी रह गई। वैसे काफ़ी बदनाम है। इसके सहारे जीत मुश्किल है। भाजपा वाले आये थे, ना कर दिया। जब से राजनीति में आया, इसी के साथ रहा। अब बच्चे जिद कर रहे हैं - बापू, सीट ले लो। पर कोई इनसे पूछे पचास लाख कैसे आते हैं। वह तो टिकट बेच कर ही जो कमा ले। हार तय है। यह सीट भी कांग्रेस के हाथ जायेगी। पंजाबन के लटके-झटके चलने वाले नहीं। टिकट नहीं लेता। यह दूसरी हार होगी। पर क्या करें, बच्चों की खुशी के लिए टिकट लेनी ही पड़ गई। जैसे पंद्रह लाख डूबते, पच्चीस लाख भी डूबेंगे।

नेता जी ने करोड़ों कमाये

नेता जी ने जो घोषणा अखबारों में छपवाई है, जीतने के बाद उसे लागू करें तो राज्य का खज़ाना खाली होगा ही, कहीं न कहीं से कर्ज़ का भी जुगाड़ करना पड़ेगा। राज्य में जितने लोग़ों ने एक लाख तक का कर्ज़ ले रखा है, सब माफ़। बारहवीं जिसने पास कर ली, उसे तीन हज़ार बेरोज़गारी भत्ता। जितनी लड़कियों ने बारहवीं पास कर ली, उनहें आगे की पढ़ाई करने के लिए कॉलेज जाने हेतु स्कूटर अथवा स्कूटी मुफ़्त। अब भला ऐसी सरकार दूसरी कहां से मिलेगी जो मुफ़्त में ही इतनी सारी चीजें दे दे। पर नेता जी ने किसी को भी टिकट मुफ़्त में नहीं दिया। इलाके और कैंडिडेट को देखते हुये हर सीट के दाम तय कर दिये। पंद्रह से पचास लाख तक। बिना चढ़ावा चढ़ाये टिकट किसी हाल में नहीं मिल सकता, भले ही कितने ही नजदीकी क्यों न बनते हो? टिकट चाहिए तो नोट लाओ और लोग़ों ने नोट दिए, नेता जी ने करोड़ों कमाये। इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि उनकी सरकार तो बननी नहीं है, फ़िर टिकटार्थियों से ही क्यों न कमाई कर ली जाये।

गपशप

आडवाणी और राममंदिर

आडवाणी ने अपनी रथयात्रा की 20वीं वर्षगांठ पर सोमनाथ की यात्रा की और कहा कि अयोध्या में राममंदिर जरूर बनेगा।

यह आडवाणी ही थे जिन्होंने रथयात्रा कर देश में सांप्रदायिक उफान लाया था, राममंदिर बनाने के लिए लफंगों का बजरंग दल बनाया था और राममंदिर के बहाने मुफ़्तखोर और गुंडागर्दी में सिद्धहस्त साधुओं-संन्यासियों को रोज़ ही मालपुए खिलाने का इंतज़ाम कराया था। राममंदिर तो बना नहीं, बाबरी मस्जिद का विध्वंस अवश्य हो गया।

आडवाणी और संघ एवं भाजपा के सब नेता मंच पर खड़े होकर बाबरी मस्जिद का विध्वंस होता देखते रहे। इसके बाद दंगे करवाये। राजगद्दी पर भी कब्ज़ा कर लिया।

इसके बावजूद राममंदिर नहीं बन सका। अब राममंदिर बनेगा भी नहीं। यह पूरा संघ परिवार कहता है। पर अंतिम वक्त में, जब आडवाणी के हाथ में सत्ता आने की कोई उम्मीद नहीं रही, वे कह रहे हैं कि राममंदिर बनेगा तो लोग़ भी देखेंगे, कब बनेगा, कैसे बनेगा और अगर बनेगा तो कितने लोग़ों की बलि लेगा?

दलितों के गांव में राहुल

'युवराज' राहुल ने श्रावस्ती की यात्रा की। सतकाईडीह गांव में गये। दलितों का गांव। मायावती के मायाजाल का शिकार। राहुल को देखते ही गांव की औरतें सज-धज कर जुट गईं और कहा - अरे, ये तो राजा बाबू जैसे लगते हैं। ये राजा बाबू हैं। पर कांग्रेस के लोग़ यहां आवत नहीं हैं। वोट सारे हाथी पर पड़त हैं। राहुल चुप रहे। गांव की इन नैना मटकाने वाली औरतें से क्या बोलते? जिसके यहां ठहरे थे, वह वीवीआईपी बना हुआ था। एक अख़बार ने फ्रंट पेज पर राहुल के साथ उसकी तस्वीर छाप रखी है। चौकी पर बैठे थाली में दोनों रोटियां खा रहे हैं। खाट पर सोये। सुबह खेतों की तरफ़ भी गये। हैंडपंप पर कुल्ला भी किया और नहाया भी। फ़िर सन से रस्सी बांटते देख चकित हो गये, पूछा, यह क्या है? तो उन्हें बताया गया कि यह रस्सी बनाई जा रही है। बहरहाल, राहुल की इस यात्रा की ख़बर राज्य सरकार को पता नहीं चल पाई और मायावती ने हंगामा मचा दिया। इतने निकम्मे हैं ख़ुफ़िया विभाग वाले। राहुल आये और लखनऊ से विमान से वापस गये और ये कान में तेल डाल कर सोते रहे। पर अब मायावती कर भी क्या सकती हैं? जितना चाहें, अफ़सरों को डांट-फटकार लें।

कभी जीत, कभी हार

कई राज्यों में चुनाव का मौसम है। नेताओं को फुर्सत नहीं है। या तो अपने राज्य में चुनाव लड़ रहे हैं या दूसरों के लिये चुनाव प्रचार कर रहे हैं। इस देश में पहले सिर्फ़ एक ही पार्टी थी-कांग्रेस। फ़िर कांग्रेस में ही दो कांग्रेस हुई। परिवार बढ़ने पर बंटवारा स्वाभाविक है। इसके बाद एक पार्टी आई जिसका नाम जनता पार्टी था। यह कई पार्टियों के मेल से बनी थी। इसकी सरकार बनी तो कुछ समय बाद सभी पार्टियां धीरे-धीरे अलग होने लगी। पर जनता नाम किसी ने नहीं छोड़ा। इसी में एक भारतीय जनता पार्टी बन गई और देश में शासन करने लगी। कांग्रेस हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों को उकसाती थी, पर इसने सिर्फ़ हिंदुओं को गोलबंद करना शुरू किया और मुसलमानों को कांग्रेस के लिये छोड़ दिया। हिंदुओं और मुसलमानों को लड़वाने में इन्हें काफ़ी सफ़लता मिली। सफ़लता कांग्रेस को मिली और भारतीय जनता पार्टी को भी। अब राजनीति के नाम पर ये चुनाव-चुनाव खेलते हैं और कभी जीतते हैं, कभी हारते हैं।

फ़िज़ा ने बताया नया सच

चंद्रमोहन उर्फ चांद मोहम्मद को जब टिकट नहीं मिली और न ही उनकी 'धर्मपत्नी' सीमा बिश्नोई को, इससे इन्हें जितना दुःख नहीं हुआ, उससे ज्यादा फ़िज़ा को खुशी हुई और उसने इस खुशी को जनता जनार्दन से शेयर करने के लिए प्रैस कांफ्रैंस कर डाली। पत्रकारों को मिठाइयां तो खिलाई ही गईं साथ में डब्बे भी दिए गए। यहां फ़िज़ा ने एक ऐसे सच की घोषणा की जो अब तक की प्रेस कांफ्रैंसों में सामने नहीं आया था। उसने कहा कि चांद मोहम्मद ने मेरे साथ हिंदू-रीति रिवाज के अनुसार भी शादी की थी और सात फेरे लगाए थे। फ़िज़ा ने पत्रकारों को लैपटॉप पर वो सारी तस्वीरें दिखाईं जो उनकी हिंदू रीति-रिवाज से हुई शादी का प्रमाण थीं।

इधर चंद्रमोहन गमगीन होकर फिर अंगूर की बेटी से नज़रें मिला रहे थे। सीमा बिश्नोई ने यद्यपि उन्हें माफ कर दिया, पर बेचारे टिकट नहीं मिलने से काफी हैरान और परेशान हैं। अब अगला मौका कब मिलेगा, कोई ठीक नहीं।

टिकट नहीं मिला

शहर की एक तेज तर्रार और ख़ूबसूरत पार्षद जो यदा-कदा अभिनय भी कर लेती हैं, बड़ी निराश और हताश हैं। टिकट दिए जाने का पक्का वायदा किया गया था। खुशी में उन्होंने परिचितों, दोस्तों और समर्थकों को मिठाइयां भी खिला दी थीं। मंदिर में पूजा पाठ कर लिया था और गुरुद्वारे में मत्था भी टेक आई थीं। पर न जाने क्या हुआ टिकट उन्हें न मिलकर किसी और को मिल गया जिसका थोबड़ा भी देखना वे पसंद नहीं करतीं।

बूटा सिंह का 'दलित समर्थन'

अनुसूचित जाति एवं जनजाति आयोग के अध्यक्ष बूटा सिंह ने पिछले दिनों यह बयान दिया कि चूंकि भारत के मुख्य न्यायाधीश बालाकृष्णन एक दलित हैं, इसलिए उनकी मिट्टी पलीद हो रही है और मीडिया भी उन्हें निशाना बना रहा है। कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश दिनकरन जो दलित हैं, उन्हें उच्चतम न्यायालय में पदोन्नत कर भेजा जाना था लेकिन उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार का वकीलों ने काफी विरोध किया। इस पर भी बूटा ने दलित राग छेड़ दिया।

सरदार बूटा सिंह मुख्य न्यायाधीश और दलित जजों के प्रति इतने संवदेनशील क्यों हो गए हैं और क्यों इन्हें लगने लगा कि दलित होने के कारण उनकी इतनी आलोचना हो रही है, यह समझना कठिन नहीं है। देश के गृहमंत्री, बिहार के राज्यपाल और कई महत्वपूर्ण व मलाईदार पदों पर बैठ चुके बूटा सिंह स्वयं दलित तो हैं ही, भ्रष्टाचार की साक्षात मूर्ति भी हैं। विभिन्न पदों पर रहने के दौरान उन्होंने इतनी काली कमाई की है जिसका अंदाजा लगाना आसान नहीं है। अभी भी ये

भ्रष्टाचार के एक बड़े मामले में फंसे हैं। इनके सुपुत्र सर्बजोत ने अपने बाप से काम करवा देने के एवज में एक व्यक्ति से एक करोड़ रुपए रिश्वत की मांग की और पुलिस के फंदे में पड़ गया। इस मामले में बूटा सीधे फंसे हुए हैं। बेटा बेचारा तो बाप के नाम पर बाप के लिए रिश्वत मांग रहा था, यानी बूटा सिंह के एजेंट के तौर पर काम कर रहा था। अब वह जेल में है और इधर बूटा अपनी और अपने सुपुत्र की चमड़ी बचाने के लिए जुगाड़बाजी में लगे हुए हैं। यह मामला चूंकि उच्चतम न्यायालय में जाना ही है, इसलिए स्वयं एक दलित होकर 'दलित' मुख्यन्यायाधीश के प्रति हमदर्दी दिखाकर वे उनकी नज़रों में बने रहना चाहते हैं ताकि उनके बेटे को 'न्याय' मिल सके।

सर्बजोत द्वारा बाप के नाम पर पैसे वसूले जाने का जब भंडाफोड़ हुआ तो बूटा पर चारों ओर से थू-थू होने लगी और उनसे इस्तीफ़ा मांगा जाने लगा। इधर सीबीआई ने भी बूटा से इस मामले में पूछताछ करनी चाही, पर उसे इसकी इजाजत नहीं मिली, क्योंकि बूटा सोनिया के बड़े चमचों में अपना अच्छा-खासा स्थान रखते हैं और 'आला कमान' के आदेश पर उनके घर से मैला भी उठा सकते हैं। यही कारण है कि बूटा ने पूरी बेशर्मी के साथ कहा कि वे इस्तीफा देने वाले नहीं, कोई चाहे तो उनके सिर पर जितने जूते मार ले।

जहां तक दलित होने के कारण उनके खिलाफ़ अथवा मुख्य न्यायाधीश बालाकृष्णन के खिलाफ़ साजिश किए जाने का आरोप बूटा लगा रहे हैं, वह अत्यंत हास्यास्पद है। यह बात सच है कि अभी भी देश में दलितों-पिछड़ों-आदिवासियों की स्थिति अच्छी नहीं है और विविध स्तरों पर उनका शोषण जारी है, पर जहां तक बूटा, बालाकृष्णन, पासवान, मायावती जैसे 'दलितों' का सवाल है तो ये अब दलित रह ही नहीं गए हैं। इनकी जाति कोई नहीं पूछता। वे सभी जिनका काम इनसे बनता है, इनके जूते साफ़ करने को तैयार होंगे। ये 'दलित' शासक वर्ग में शामिल हैं और शासक होना ही इनकी जाति है इसलिए ये अपने आपको दलित कहकर जनता की आंखों में धूल न झोंकें।

दूसरी तरफ़, बूटा जैसे लोगों को यह समझना चाहिए कि हर स्तर पर दलितों के खिलाफ़ साजिश ही साजिश होती रही है तो वे उच्च पदों तक कैसे पहुंच पाए। डॉ. आंबेडकर से लेकर न जाने कितने ही दलितों ने शासक वर्ग में भागीदारी की। हमारे यहां दलित मंत्री हुए, जज हुए और राष्ट्रपति तक बने। लेकिन यह कहने का मतलब यह नहीं कि दलित उत्पीड़न नहीं है। निश्चय ही, वे वर्तमान सामाजिक ढांचे में उत्पीड़न और शोषण के शिकार हैं, पर बूटा जैसे लोग दलित होने के नाम पर भ्रष्टाचार की गंगा में डूबना-उतराना चाहें तो सत्ता के वर्तमान ढांचे में उन्हें ऐसा करने की पूरी छूट मिली हुई है।

-प्रतिनिधि